Snehal Sindhu

Monthly Bulletin for Divine Message of Spiritual Relationship, Friendship and Love
Vol. 012 Issue 02 FEBRUARY 2026 Pages 14 A.S. Rs 100

"Akshardham" Temple, Powai Patotsav

Sikshapatri Dwishatabdi Mahotsav at Sambhaji Nagar

सत्संग समाचार

✻ मंगलवार, दि. ३ फरवरी को 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई का २२वाँ पाटोत्सव और गुरुहरि काकाजी महाराज का ७५वाँ साक्षात्कार दिन प.पू. दिनकरभाई और सभी संतभाईयों की उपस्थिति में भक्तिभाव से मनाया गया।

"Akshardham" Temple, Powai Patotsav

सबसे पहले पू. हितेनभाई, प.भ. पियुषभाई खोरसियाने सभी संतभाईयों और हरिभक्तों के हस्त पाटोत्सव की विधि करवाई।

उसके बाद पाटोत्सव निमित्त ठाकोरजी को अन्नकूट अर्पण हुआ।

प.पू. दिनकरभाई ने कहा कि आज पवई मंदिर का पाटोत्सव और गुरुहरि काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन हम मना रहे है। आज ही के दिन सन् १९९४ में गुरुजीने दिल्ली मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा की। समढियाला मंदिर में भी निर्मलस्वामीजीने पाटोत्सव किया था। २०१६ में पवई मंदिर की संतबहनों को भागवती दीक्षा दी। काकाजीने शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज को अपना सबकुछ अर्पण कर दिया। शास्त्रीजी महाराज के साथ पिता-पुत्र जैसा उनका संबंध था। गुलझारीलाल नंदाजी को चुनाव में जीत दिलवाकार काकाजीने अशक्य में से शक्य कार्य किया। जिसके फलस्वरुप योगीजी महाराजने गोंडल में उन्हें साक्षात्कार करवाया। उसके बाद गुणातीत समाज के लिये उनके अथाक परिश्रम से हम आज आनंद में सत्संग कर रहे है। कल दि. २ फरवरी को ब्र.स्व. महंतस्वामीजी का प्रागट्यपर्व मनाया गया। साथ ही छोटे-छोटे बच्चोंने सत्संगदीक्षा के ३१५ श्लोक कंठस्थ बताये। आज के दिन हम जो भी प्रार्थना करेंगे वो सभी गुणातीत स्वरुप जरुर स्वीकारेंगे।

प.पू. वशीभाई ने कहा कि आज पवई मंदिर का पाटोत्सव, गुरुहरि काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन, नवदीक्षित संतभाईयों की दीक्षाविधि। सभी नवदिक्षित संतभाईयों को ये निर्णय लेने के लिये धन्यवाद है। उनके परिवार को भी बहुत धन्यवाद देते है।

पवई मंदिर में सभी मूर्तियाँ जीवंत है। आज भगवान की सेवा में कोई क्षति रह गई हो उसके लिये क्षमायाचना का दिन है। शास्त्रीजी महाराजने अक्षरपुरुषोत्तम शुद्ध उपासना की बात समझाई और काकाजीने गुणातीत संत द्वारा श्रीजी महाराज प्रगट है वह रहस्य की बात समझाई। तो काकाजी के प्रति हमारी निष्ठा ज्यादा से ज्यादा दृढ हो वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने कहा कि गुरुहरि काकाजी महाराज के साक्षात्कार दिन को पप्पाजी विजयदिन कहते थे। हमें भगवान और संत में ज्यादा रहना है। वही हमारा मुख्य लक्ष्य है। काकाजीने केवल शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज को ही आगे रखा। तेजोमय अक्षरधाम का दर्शन करना वही उनका लक्ष्य

था। आज के दिन उन्हें साक्षात्कार हुआ उसका फायदा यह हुआ कि (१) योगीबापा के सच्चे स्वरुप का दर्शन सभीको हुआ। उन्होंने हमें सीखाया कि गुरु जो भी कहे उसमें केवल हाँ बोलना। (२) साधनामार्ग सरल हो गया। ब्राह्मीशक्ति सभीके लिये सुलभ कर दी। (३) स्त्री-पुरुष का भेद नही रखा। उस समय ५१ बहनों भगवान भज रही थी, आज ४०० से भी ज्यादा बहनें साधु का जीवन जी रही है। (४) कर्मयोगी साधु का आरंभ हुआ। भगवान को राजी करना, सहन करना, दूसरों को मदद करने के लिये तत्पर रहे वही साधु है। त्यागी और साधु में फर्क है। त्याग बाहर से किया है, लेकिन अंदर नहीं होगा तो भगवा वस्त्र का भी कोई मतलब नहीं है। काकाजी को जो साक्षात्कार हुआ उसके बारे में योगीबापाने अपनी डायरी में दो पन्ने लिखे है। वह पत्रसंजीवनी पुस्तक में लिखा है। वह साक्षात्कार हमारे लिये सरल बने उसके लिये काकाजीने हमें अलग अलग Techniques दिये। तो काकाजी सभीको सुखी रखें वही प्रार्थना।

इस मंगल अवसर पर पू. संकेतभाई मेघानंद, पू. विशालभाई बिरादर, पू. आदर्शभाई और पू. अंबरीषभाई (पूजारी) को कर्मयोगी साधु की दीक्षा दी। सभीने उनके निर्णय की सराहना की और विशिष्ट आशीर्वाद भी दिये।

Guruhari Kakaji Maharaj Shakshatkar Sabha and Diksha Vidhi of New Saint Brothers

✻ शुक्रवार, दि. ६ फरवरी को शाम को संभाजी नगर में गुरुहरि काकाजी उद्यान में प.पू. भरतभाई का ७२वाँ प्रागट्यदिन प.पू. दिनकरभाई तथा सभी संतभाईयों, संतबहनों तथा कई हरिभक्तों की हाजरी में 'मूर्ति सुख मन भायो...' विषय पर आनंदोत्सव के साथ मनाया गया।

Guruhari Kakaji Maharaj Shakshatkar Sabha and Diksha Vidhi of New Saint Brothers

प्रारंभ में युवतीओं-युवकों और गृहस्थ हरिभक्तोंने भरतभाई के जीवन पर आधारित विशिष्ट ड्रामा प्रस्तुत कर सभीको उनके प्रसंगों में डूबों दिया। पू. सिद्धिबहन, प.भ. शिल्पाबहन मूले, प.भ. पूजाबहन तथा अन्य साथीदारों के अथाक परिश्रम से यह नृत्यनाटिका सभी के समक्ष प्रस्तुत किया।

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

माहात्म्यदर्शन की शृंखला में प.भ. रुपेशभाई गोपलानी, प.भ. कविताबहन वाघ, प.भ. शिल्पाबहन मुले, पू. आरतीबहन ने भरतभाई के साथ के स्वानुभाव के प्रसंग बताकर अपना भाव उनके चरणों में रखा।

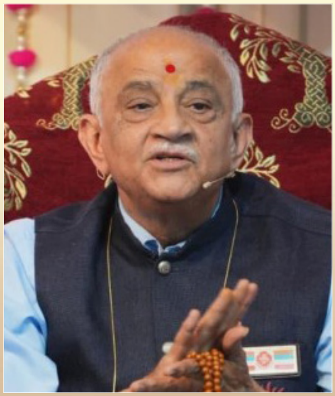

प.पू. वशीभाई ने कहा कि सभी कलाकारोंने कम समय में बहुत सुंदर प्रसंगो का दर्शन करवाया। भरतभाई के जीवन में से कुछ बातें हमें सीखनी चाहिए। **(१)** सातत्य - मंदिर में सुबह-शाम धुन-कथावार्ता कभी रुकती ही नहीं। गुरुहरि काकाजीने जो तारदेव में शुरु किया था वह उन्होंने नियमित रखा है। हम तारदेव में थे तभी बहुत कार्य एकसाथ चलते थे। काकाजी के साथ विचरण पर भी जाना पडता था। ऐसे समय काकाजीने क्या बोला है वह भरतभाई बराबर याद रखते थे। सत्पुरुष की ओर दृष्टि रखनी वह आध्यात्मिकता में सबसे मुख्य है। वो भरतभाई के जीवन में सहज दिखता है। **(२)** No Complaint - कभी भी कुछ भी प्रसंग बनें फरियाद नहीं करना। हर परिस्थिति में वे धुन का सहारा लेना वह सीखाते है। **(३)** सुंदर अक्षर - पत्र, लेख या कोई भी कार्य हो वे काकाजी उनके पास लिखवाते थे। हमें साधुता सीखनी है। हमारी दृष्टि केवल हमारे गुरु की ओर होनी चाहिए, वह भरतभाई खुद जीकर हमें बताते है। तो हे भरतभाई, जैसे आपका संबंध आपके गुरु के साथ था वैसा हमारे गुरु के साथ संबंध ज्यादा बढे वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने अपने आशीष में कहा कि बुद्ध भगवानने कहा है कि तकलीफ है तो उसका हल भी होता है, तो वह धुन है। संभाजी नगर को हम याद करते रहते है। आज जो ड्रामा हुआ वह एक हफ्तें में तैयार किया उसके लिये धन्यवाद है। भरतभाई के प्रागट्यदिन पर ऐसी भक्ति अदा करना वह बडी बात है। वे भक्तवत्सल है। कोई हरिभक्त कितना भी दूर रहता हो उसके लिये वे जरुर से उनको मिलने पहुँच जाते है। हमारे गुणातीत की Hierarchy है उसमें यह जरुर होना चाहिए कि हरिभक्त के लिये क्या न हो सके? भरतभाई का जीवन सभीके लिये बहुत प्रेरणामय है। तो उनके जीवन में से एक गुण हम हमारे जीवन में उतारे वही प्रार्थना।

प.पू. भरतभाई ने आशीष बरसाते हुए कहा कि गुरुहरि काकाजी को धन्यवाद देते है। उनकी दृष्टि में आ गये तो उनके प्रति प्रीति दृढ हो गई। महेन्द्रबापु कांदिवली में सभा लेते थे तभी हम उसमें जाते थे। वो बोले ऐसा करते थे। काकाजीने हमारी होंशियारी नहीं देखी केवल हमारे दिल की भावना देखकर भगवान में जोड दिया।इसबार मैं Return Gift में 'गुणातीत ज्ञान का नवनीत' और 'इतना तो अचुक कर लेना' उसके नियम बताता हुआ छोटा कार्ड दे रहा हूँ, उसे हमें जीवन में दृढ कर लेना है। गुणातीत संतों बहुत समर्थ होते है। उनके साथ रहने से ही हमारे काम हो जाते है। उनको जो करवाना है उसके लिये हमें निमित्त बनाकर करवा लेते है। इसमें हमारे मन का कुछ नहीं चलता। संभाजी नगर में सत्संग होना वह बहुत अद्भुत बात है। अभी चार युवकों को दि. ३ फरवरी को हमने दीक्षा दी वह संभाजी नगर के ही है। तो गुणातीत संत के सानिध्य में रहने से अंतर परिवर्तन हो जाता है। काकाजी के पास आया तब तीन बात मैंने पकडकर रखी। **(१)** भजन करना। काकाजी जब भी धुन करने बैठते तुरंत भजन करने बैठ जाते थे। ऐसे नियमित स्वयं का भजन कर लेना चाहिए। उससे हमारे अंतर का कचरा साफ होता है। तो काकाजीने हमारे पास ऐसा भजन करवा लिया कि कोई कचरा डालने की कोशिश करें तो वो हमारे अंदर प्रवेश कर ही नहीं सकता। धुन करने से हमारी Battery charge हो जाती है। काकाजी कहते थे Switch on करो तो प्रकाश हो जायेगा।

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

(२) सेवा करो – मंदिर और हरिभक्तों की सेवा में जुडे रहो। आज पवई मंदिर में नूतनीकरण का कार्य चल रहा है तो बहुत बडी सेवा हम कर सकते है। सेवा करने से हमारे प्रारब्ध टल जाते है। (३) सत्संग – काकाजी हमेशा कथावार्ता चालु ही रखते थे। उनका एक शब्द भी जीवन में असर कर जाता था। आज यहाँ जो आये है वो जो भी बातें हुई है उसमें से एक शब्द भी लेकर जायेंगे तो उनका काम हो जायेगा। तो ये तीन बातें हम हमारे जीवन में दृढ करें वही प्रार्थना।

संभाजी नगर के हरिभक्तों द्वारा विशिष्ट हार, शाल तथा भेट भरतभाई को अर्पण हुए।

अंत में प्रागट्यदिन निमित्त केक कटिंग हुआ।

P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatya Din celebration at Sambhaji Nagar

✻ शनिवार, दि. ७ फरवरी की भजन संध्या संभाजी नगर में गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में प.पू. दिनकरभाई और सभी संतभाईयों, संतबहनों, स्थानिक एवं मुबंई के कई हरिभक्तों की उपस्थिति में भक्तिभाव से मनाई गई।

प.पू. भरतभाई ने आशीष देते हुए कहा कि आज जो अनावरण होने जा रहा है वह शिक्षापत्री पुस्तक पाँच भाषा में लिखा गया है – संस्कृत, गुजराती, हिन्दी, अंग्रेजी और गुजलीश। गुरुहरि काकाजी महाराज की स्मृति में यहाँ संभाजी नगर में अद्भुत भजन संध्या हुई।

Bhajan Sandhya at Sambhaji Nagar

काकाजी को केवल याद भी करते है तो आँख में आंसु आ जाते है। वे कुछ मुख्य बात बताते थे। **(१)** आप स्वामिनारायण मंत्र सिद्ध कर लो। स्मृति के साथ मंत्रजाप करने से मूर्ति सिद्ध होती है। वैसे काकाजी को मूर्ति सिद्ध थी। गुणातीत संतोंने हमें बहुत स्मृतियाँ करवाई है। काकाजी के पास कोई भी भक्त कैसा भी प्रश्न लेकर आता था उसका वे ऐसा समाधान करते थे कि उसको अंतर में हाश हो जाती थी। काकाजी बहुत भक्तवत्सल थे। उनकी करुणा से हम आज यहाँ सत्संग कर पा रहे है। **(२)** खुल्ला संबंध रखो। काकाजी मैं आपका हूँ! आप जो भी करो वो मेरे हित का ही है। हमें केवल इतना दृढ कर लेना है। **(३)** खुद का छोड दो। सामनेवाले के सहायरुप होने के लिये खुद का स्वभाव छोडना होता है। हम हमारे स्वभाव की वजह से दु;खी है। कोई भक्त हमें कुछ बोल देते है उसमें हमारे स्वभाव छोडने के लिये ही होता है ऐसा मानना। हम किसीको कुछ देते है तो भगवान उसका ज्यादा करके देते है। गुस्सा बिलकुल करना नहीं है। तो हम कभी भी दु:खी न रहे, आनंद करते रहे वही प्रार्थना।

प.पू. दिनकरभाई ने आशीष देते हुए कहा कि यहाँ महिने की अंतिम तारीख पर भजन संध्या होती है। आज दि. ७ को भजन संध्या हो रही है वह यहाँ के समाज के लिये फायदेमंद हो गया। त्रिवेणी संगम हम मना रहे है। **(१) भरतभाई का प्रागट्यदिन (२) भजन संध्या (३) शिक्षापत्री द्विशताब्दी महोत्सव।** जितना हम काकाजी के स्मृति का चिंतवन करेंगे उतना ज्यादा फायदा होगा। काकाजी को पहलीबार देखा तब ही मुझे Love at first sight हो गया था। बाद में मुझे Appendix की तकलीफ हुई थी, तो काकाजी विचरण करके New York आ गये थे तो उनको पता चला और वो संतभगवंत साहेबजी और हर्षदभाई भट्ट के साथ खास मुझे देखने हमारे

Bhajan Sandhya at Sambhaji Nagar

घर पधारे। उन सभी की बस के बदले प्लेन की टिकट हमने करवाई थी। तो काकाजी अंतर से राजी हो गये थे। तो बडे पुरुषों को हमें अंतर से राजी कर लेना है। सत्पुरुष हमें जो भी आज्ञा करें उसमें केवल हमें हाँ बोलना है, उससे हमारा प्रारब्ध बदल जाता है। तो हम हमारे गुरु को राजी कर ले वही प्रार्थना।

शिक्षापत्री द्विशताब्दी महोत्सव निमित्त शिक्षापत्री पुस्तक का अनावरण भी हुआ।

चुनाव में जीतकर शामिल होनेवाले नये कोर्पोरेटर श्री. सुरेन्द्र कुलकर्णी, श्रीमती कमला थोरातजी, श्रीमती सुमित्रा महासके इस भजन संध्या में पधारे थे और संतभाईयोंने खेस पहनाकर उनका अभिवादन भी किया।

Release of Shikshapatri Book

With new Corporator Shri. Surendra Kulkarniji and other dignitaries

उसी दिन सुबह गुरुहरि काकाजी उद्यान में शिक्षापत्री द्विशताब्दी महोत्सव निमित्त दो दिन विशिष्ट पारायण का आयोजन भी हुआ। दिनकरभाई, भरतभाई और वशीभाईने व्यासपीठ पर विराजमान होकर शिक्षापत्री के कई श्लोक का पठन करके सभीको अच्छा मार्गदर्शन दिया।

Shikshapatri Dwishatabdi Parayan at Sambhaji Nagar

प.भ. हेरतभाई और अन्य बालमंडल के बच्चोंने शिक्षापत्री के कईं श्लोक मुखपाठ बताकर सभीका राजीपा प्राप्त किया।

Shikshapatri Dwishatabdi Parayan at Sambhaji Nagar

साथ ही IndoBrain School के Principal और शिक्षकों खास पारायण में दर्शन के लिये आये थे। संतभाईयोंने उनका भी स्वागत किया।

Indo Brain School Principal and Teachers in Parayan

✻ शनिवार, दि. ७ फरवरी को योगी डिवाईन सोसायटी द्वारा संभाजी नगर के शीशु विकास केन्द्र संचालित नवभारत शिक्षण संस्था को 2 Computers भेट में दिये। वहाँ के छात्रों को पढाई के लिये करीब 4 Sets of Essential Educational Materials दिये। स्कूल के संचालकोंने योगी डिवाईन सोसायटी के प्रति आभार व्यक्त किया और कहा कि आपकी दी हुई सभी भेट बच्चों के लिये उनकी पढाई में बहुत सहायरुप होगी। प.पू. दिनकरभाई के साथ पवई के संतभाईयों तथा प.भ. दिपकभाई जहागीरदार की हाजरी में यह कार्य हुआ। स्कूल की Principal श्रीमती कालसकर मेडम और सु.श्री संजीवनी वर्धवेने सभीके प्रति आभार व्यक्त किया।

Donation of Computers and Educational Materials

✻ रविवार, दि. ८ फरवरी को संभाजी नगर के Baba Sai AIDS से पीडित ६ से १८ साल के बच्चों के लिये संस्था के निवासस्थान में अनाज का डोनेशन योगी डिवाईन सोसायटी द्वारा दिया गया। वे संस्था कोई भी सरकारी मदद नहीं लेती है और सभी संचालन बाहर से आये हुए Private डोनेशन पर ही कार्य करती है। संस्था के संचालकोने योगी डिवाईन सोसायटी के सभी संतों के प्रति आभार व्यक्त किया।

Donation of Ration to Baba Sai Institute

✻ रविवार, दि. १५ को ब्र.स्व. अक्षरविहारीस्वामीजी के ९१वें प्रागट्यदिन निमित्त पवई से प.पू. दिनकरभाई, प.पू. वशीभाई और अन्य संतभाईयों खास सांकरदा पधारे थे। हरिधाम से प.पू. निर्मलस्वामीजी और संतों, कंथारिया से पू. विज्ञानस्वामीजी, अनुपम मिशन से सद्‌गुरु संत प.पू. रतिकाका तथा संतभाईयों तथा स्थानिक संतों, हरिभक्तों की उपस्थिति में भक्तिभाव से यह उत्सव मनाया गया।

पवई मंदिर की ओर से संतभाईयोंने अक्षरविहारीस्वामीजी की मूर्ति को हार अर्पण किया।

प्रासंगिक उद्‌बोधन में दिनकरभाई और अन्य संतों के आशीर्वाद सभीको प्राप्त हुए।

B.S. Akshariharisiwamiji's 91st Pragatya Din celebration at Sankarda

B.S. Aksharvihariswamiji's 91st Pragatya Din celebration at Sankarda

✻ शुक्रवार, दि. २० फरवरी को प.पू. दिनकरभाई, पू. किशोरभाई मास्टर्स और पू. अेन्जीबहन के विदाय समारंभ निमित्त विशिष्ट सभा 'अक्षरधाम' स्वामिनारायण मंदिर, पवई में हुई।

Farewell of P.P. Dinkarbhai, P. Kishorebhai and P. Angiben

|| સ્વામિશ્રીજી ||

'અહીંનો પથ્થર પણ બોલશે બ્રહ્મરૂપ થાઓ, બ્રહ્મરૂપ થાઓ' – ગુરૂહરિ કાકાજી

સંતભગવંત સાહેબજી ઘણાં વર્ષો પહેલાં અક્ષરધામ સ્વામિનારાયણ મંદિર, પવઈમાં એક સમૈયા નિમિત્તે પધાર્યા હતા. તે વખતે તેમણે ગુણાતીત પુરૂષો માટે એક રહસ્યની વાત ઉચ્ચારી હતી. તેમણે કહ્યું હતું કે **'કાકાજી જેવા ગુણાતીત સત્પુરૂષ ભવિષ્યમાં શું થવાનું છે એ વાત નથી ઉચ્ચારતા, પરંતુ તેઓ જે કહે છે એ પ્રમાણે ભવિષ્યમાં થાય છે.'** અર્થાત્ તેમની આર્ષવાણીના સ્વરૂપે બધા જ સંજોગો અને પ્રાકૃતિક પરિબળો તે મુજબ કામ કરે છે અને તેમની આર્ષવાણી સાકાર સ્વરૂપ લે છે. આ વાતનું વધારે સ્પષ્ટીકરણ કરતાં તેઓએ કહ્યું હતું કે બ્ર.સ્વ. યોગીજી મહારાજ અને ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજે જે વાત ઉચ્ચારી હતી તે અત્યારે સાકાર સ્વરૂપે આપણે જોઈ રહ્યા છીએ. પવઈ મંદિર માટે છેક ઈ.સ. ૧૯૬૭માં યોગીજી મહારાજે કહ્યું હતું કે **'અહીં ભવિષ્યમાં ભવ્ય મંદિર થશે!'** તે વખતે તો મંદિર તો શું પણ માનવ વસવાટ માટે પણ સાનુકૂળ સંજોગો ન હતા. આપણી જમીન છે ત્યાં અને આજુબાજુ બધે જ ગાઢ જંગલ હતું અને માનવવસ્તી તો ખૂબ જ પાંખી હતી. વાહનવ્યવહારની કોઈ સગવડ નહતી. પરંતુ યોગીબાપાના શબ્દો સાકાર થવાના હોય તે રીતે આ ક્ષેત્રનો અદ્ભુત વિકાસ થયો અને આજે આપણે જોઈએ છે કે અક્ષરધામ સ્વામિનારાયણ મંદિર અહીં ખડું થઈ ગયું. પવઈનો હિરાનંદાની વિસ્તારનો વિકાસ શ્રી નિરંજન હિરાનંદાનીએ એવો તો અદ્ભુત કર્યો કે મુંબઈના ખૂબ જ પ્રતિષ્ઠિત અને વિકાસશીલ વિસ્તારોમાં તેની ગણના થવા લાગી. યોગીબાપા બોલ્યા હતા કે **'અહીં એક–એક ફૂટ નહીં, પરંતુ એક–એક ઈંચની કિંમત થશે!'** અને ખરેખર તે આજે આપણે જોઈ રહ્યા છીએ. હિરાનંદાની ગાર્ડન્સ એ વિસ્તારનો એટલો બધો વિકાસ થયો છે કે સામાન્ય માણસ માટે તો અહીં ઘર લેવું લગભગ અશક્ય જ થઈ ગયું છે.

કાકાજી યોગીજી મહારાજના ઉપરોક્ત આશીર્વાદનો મર્મ સમજ્યા, એટલું જ નહીં તેનો યથાર્થ તોલ કરી જ્યારે શર્માજીએ આ મંદિર માટે જમીન આપી ત્યારે તેના વિકાસ માટેનું બીડું ઝડપ્યું અને અવારનવાર સમૈયા,

શિબિર, યજ્ઞ કરીને આ કેન્દ્રને ધમધમતું રાખ્યું અને તેની આધ્યાત્મિક ગરિમા એટલી બધી વધારી કે સમય જતાં ઈ.સ. ૨૦૦૩માં સર્વે સંતભાઈઓ અને સમર્પિત હરિભક્તોના સહિયારા પુરુષાર્થથી આ મંદિર નિર્માણ પામ્યું. કાકાજી કહેતા કે **'અહીંયાં એવું આંતરરાષ્ટ્રીય સંશોધન કેન્દ્ર બનશે કે અહીંનો પથ્થર પણ બોલશે – બ્રહ્મરૂપ થાઓ, બ્રહ્મરૂપ થાઓ!'** આ શબ્દોનો આપણે વિચાર કરીએ તો ખરેખર અચરજ પામી જવાય એવું છે. સહુથી પહેલાં તો કાકાજીએ આ કેન્દ્રને 'આંતરરાષ્ટ્રીય' થશે એવું કહ્યું. એનો અર્થ કે ફક્ત મુંબઈ, ગુજરાત કે ભારતના જ નહીં પરંતુ દેશવિદેશના મુમુક્ષુઓ અને સત્યશોધકો માટે આ કેન્દ્ર લાભદાયી થશે. આજે આપણે જોઈએ છીએ કે અહીં ખરેખર દેશવિદેશના હરિભક્તો પધારી અહીંની ઘણી બધી પ્રવૃત્તિઓનો લાભ લઈ રહ્યા છે.

બીજું તેમણે કહ્યું હતું કે **'આ આધ્યાત્મિક સંશોધન કેન્દ્ર થશે!'** અર્થાત્ તેમણે કોઈ એકાદ ધર્મ કે સંપ્રદાય પૂરતી જ સંકુચિત દૃષ્ટિ નહોતી રાખી, પણ સાચી આધ્યાત્મિકતા અર્થાત્ આત્મા ને પરમાત્માની સાચી ઓળખ મળે અને સહુ કોઈ પોતાની માન્યતા, ગ્રંથિ, સંપ્રદાય, ધર્મ કે રીતિરિવાજોથી ઉપર ઊઠીને સાચી આધ્યાત્મિકતાનો અર્થ અહીં સમજશે, અમલમાં પણ મૂકશે અને અન્યને પણ તેનો લાભ લેવા સૂચવશે. બીજું એમણે કહ્યું કે **'આ સંશોધન કેન્દ્ર હશે!'** અર્થાત્ અહીં કોઈ રૂઢિચૂસ્તતા કે સ્થાપિત થયેલી પ્રણાલીને વળગી રહેવાની જડતા નહીં રાખે. આધ્યાત્મિક સિદ્ધાંતો તો હંમેશાં સનાતન જ રહેશે પરંતુ તેની સમજૂતી અને અમલ માટે સમય અને સંજોગોને અનુરૂપ એમાં નવા–નવા ફેરફાર થતા રહેશે અને સહુ કોઈને તેનો લાભ મળશે. આજે જોઈએ તો કાકાજીએ દાખવેલી **Four Point Programme** કે એવી તો બીજી કેટલીય રીતો અપનાવી સહુ કોઈ શ્રેયાર્થી સાધક પોતાની આધ્યાત્મિક યાત્રા સુખે સુખે આગળ વધારી રહ્યા છે અને પ્રગતિ પામી રહ્યા છે.

સહુથી વધુ તો કાકાજીએ એવી આર્ષવાણી ઉચ્ચારી હતી કે **'અહીંનો પથ્થર પણ બોલશે – બ્રહ્મરૂપ થાઓ, બ્રહ્મરૂપ થાઓ!'** એનો અર્થ એમ કે કાકાજીએ માનવજીવનના સર્વોચ્ચ આદર્શની વાત કરી હતી. તેમણે એવું નહોતું કહ્યું કે અહીં આવનાર હર કોઈ વ્યક્તિ ભૌતિક સુખ–સમૃદ્ધિ પામે અર્થાત્ સામાજિક, રાજકીય, આર્થિક કે શારીરિક પ્રગતિ કરે. પરંતુ એ બધું જ હોવા છતાં સાધક માટે તેમ જ બધા હરિભક્તો માટે જે સર્વોચ્ચ આદર્શ હોય કે **બ્રહ્મરૂપ થઈને પરબ્રહ્મની ભક્તિ કરવી** તેને ચરિતાર્થ કરવા માટેનું આ કેન્દ્ર હશે. એટલે કે કોઈ અન્ય પ્રગતિ માટે આવશે તો પણ તેને માટે અંતિમ ધ્યેય તો બ્રહ્મરૂપ થઈને પરબ્રહ્મની ભક્તિનો જ રહેશે. શિક્ષાપત્રીના ૧૧૬મા શ્લોક પ્રમાણે ભગવાન સ્વામિનારાયણે પણ આ જ વાતને અનુમોદન આપ્યું છેને!

કાકાજીએ ફરી એવું પણ કહ્યું હતું કે **'અહીંનો પથ્થર પણ બોલશે!'** અર્થાત્ અહીંના પથ્થર જેવા જડ વસ્તુનાં આંદોલનોમાંથી પણ આવા શ્રેષ્ઠ માનવજીવન માટેની ઉદ્દાત ભાવનાનાં આંદોલનો વહે તો પછી ચૈતન્ય મુક્તોમાં તો એ સહજ હોય ને! એટલે કે પથ્થર જેવા જડ કે આધ્યાત્મિક દૃષ્ટિએ વિકાસ માટે અશક્ય લાગતી વ્યક્તિઓમાં પણ જો આવું પરિવર્તન શક્ય બની શકે એવું હોય તો જેઓ ગુણાતીત સ્વરૂપોની ગોદમાં છે, એમના પ્રત્યે સદ્ભાવ છે, નિષ્ઠા છે, સેવા–ભજન–પ્રાર્થના કરી રહ્યા છે તેમને માટે તો આ કેન્દ્રમાંથી કેટલી મોટી ઉપલબ્ધિની શક્યતા રહેલી છે? કાકાજીએ આડકતરી રીતે તો આપણને સહુને માટે એક સ્પષ્ટ અંગૂલિનિર્દેશ પણ કર્યો છે કે આ વાત સિદ્ધ કર્યે જ છૂટકો છે. વળી કાકાજીએ આ જે વાત કરી છે તેમાં ભુક્તિ ને મુક્તિ તો સહજ જ સમાવિષ્ટ થઈ જ જાય છે. તેને માટે વિશેષ પ્રયત્ન કરીને સમય કે શક્તિ બગાડવાની જરૂર નથી કે ગુણાતીત પુરુષો પાસેથી પણ તેવા આશીર્વાદની અપેક્ષા રાખવી પણ આપણા હિતમાં નથી. પરંતુ આપણા જીવનના સર્વોચ્ચ આદર્શ – **બ્રહ્મરૂપ થઈ પરબ્રહ્મની ભક્તિ કરવી** એને માટે

જ આપણે પ્રયત્નશીલ રહીએ તો તેઓના વિશિષ્ટ રાજીપાના ફળસ્વરૂપે આપણું જીવન ખરેખર ધન્ય ને સાર્થક થાય જ. પ.પૂ. દિનકરભાઈ પણ હંમેશાં આ જ વાતનો વિશિષ્ટ આગ્રહ રાખે છે. કાકાજીએ અત્યંત રાજી થઈ તેમને જ્યારે કહ્યું કે 'તમે સંકલ્પ ન કરો તો તમારી ખોટ અને અમે પૂરો ન કરીએ તો અમારી ખોટ!' તો તેમણે એ સૂત્રનું હાર્દ પકડી આ જ આદર્શને સાકાર કરવા અને કરાવવા સંકલ્પ કર્યો છે.

તા. ૩જી ફેબ્રુઆરીના તેમના ૭૫મા સાક્ષાત્કાર દિન નિમિત્તે ભગવાન સ્વામિનારાયણ અને સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપો તથા ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજના ચરણે એ જ પ્રાર્થના કરીએ કે અમે સહુ એમણે બતાવેલ આ ઉચ્ચ આદર્શ પ્રત્યે ગતિશીલ થઈએ અને અમારું જીવન ધન્ય કરીએ...

અક્ષરધામ ગમન

*** પવઈ મંદિરની સાથે વર્ષોથી અત્યંત આત્મીયતાથી જોડાયેલા અને નિષ્ઠાવાન એવાં પ.ભ. પૂર્ણિમાબહેન જરીવાલા (ઉંમર–૭૫) ઘણા વખતથી બીમાર હતાં અને ગુરૂવાર, તા. ૧૯ ફેબ્રુઆરીના રોજ તેઓ સ્વધામ પધાર્યા.**

વર્ષોથી તેઓ તારદેવ મંદિરમાં ગુરૂહરિ કાકાજી સાથે જોડાયેલાં હતાં અને પ્રસંગોપાત સેવા કરતાં. પવઈ મંદિર થયા બાદ ત્યાં પણ તેઓ નિયમિતપણે આવતાં અને તેમની તબિયત સારી હતી ત્યાંસુધી દરેક સેવાકાર્યમાં જોડાતાં. સહુ હરિભક્તો સાથે પણ તેમને આત્મીયતા અને ઘનિષ્ઠતાનો સંબંધ હતો. તેમનાં સંતાનો પ.ભ. કેકુલબહેન, પ.ભ. ઝરણાબહેન તથા પ.ભ. હર્ષિલભાઈ તથા પુત્રવધુ પ.ભ. હિનલબહેને પણ તેમને સરસ સહકાર આપ્યો અને સત્સંગનો વારસો જાળવ્યો છે.

પ.પૂ. વશીભાઈએ તેમની અંતિમ વિધિમાં ખાસ જઈ તેમને ભાવપૂર્ણ શ્રદ્ધાંજલિ આપી હતી. તા. ૨૨ માર્ચના પવઈ મંદિરે તેમના કુટુંબીજનો વતી ત્રયોદશીની મહાપૂજા રાખવામાં આવી હતી.

પૂર્ણિમાબહેન તો અક્ષરધામમાં જ છે. ભગવાન સ્વામિનારાયણ, ગુરૂહરિ કાકાજી મહારાજ તથા સર્વે ગુણાતીત સ્વરૂપો તેમને અખંડ પોતાની પાસે રાખે અને તેમનાં કુટુંબીજનોને તેમની વિદાય સાલે નહીં અને ખૂબ બળ મળે તથા એમનો ગુણ વારસો સારી રીતે જાળવી રહે એવી જ પ્રાર્થના.

Trayodashi Mahapooja of P.B. Purnimaben

RNI Regn No : MAHMUL/2015/62272
Date of publication: 8th of every month
POSTED AT MUMBAI PATRIKA CHANNEL SORTING OFFICE MUMBAI 400001

Postal Regn No: MCW/329/2018-20
Date of posting:11th of every month

Summary of Events

(1) 22nd Patotsav Vidhi of "Akshardham" Temple, Powai and Guruhari Kakaji Maharaj's 75th Sakshatkar Din celebration and New Saints' Diksha Vidhi on 3rd February at "Akshardham" Temple, Powai. (2) P.P. Bharatbhai's 72nd Pragatyadin celebration at Sambhaji Nagar on 6th February. (3) Bhajan Sandhya on 7th January at Sambhaji Nagar. (4) Special Parayan on Sikshapatri Dwishatabdi Mahotsav at Sambhaji Nagar on 7th and 8th February. (5) Yogi Divine Society donated 2 Computers and 4 sets of Essentials Educational Materials to Shishu Vikas Kendra, Nava Bharat Shikshan Sanstha at Sambhaji Nagar on 8th February. (6) Yogi Divine Society provided a Grain donation to Baba Sai AIDS affected Children's Residential Home for children between the ages of 6 to 18 years on 8th February. (7) 91st Pragatya Din celebration of B.S. Aksharvihariswamiji at Sankarda on 15th February. (8) Bon Voyage to P.P. Dinkarbhai, P. Kishorebhai Masters and P. Angieben leaving for Paris on 20th February. (9) Article on the auspicious day of Guruhari Kakaji Maharaj 75th Shakshatkar Din on 3rd February. (10) Akshardhamgaman of P.B. Purnimaben Jariwala on 19th February.

Space for address

Space for franking

Printed Matter - Book Post

From

YOGI DIVINE SOCIETY

6D Sonawala Building, Tardeo,
Mumbai - 400 007 Tel: 2380 2527

'Akshardham' Swaminarayan Temple,
Near Hiranandani Hospital, Powai, Mumbai - 400 076
Tel: 2578 2151/2579 4314 Email: isrc@kakaji.org

Printed & Published by Bharat P Mehta on behalf of Yogi Divine Society & Printed at Jalaram Enterprise, Fairy Manor, 13, Rustom Sidhwa Marg (Gunbow Street), Fort, Mumbai - 400 001 & Published by Yogi Divine Society, 6D, Sonavala Building, 4th Floor, Tardeo, Mumbai - 400 007.

Editor: Bharat P Mehta